विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। –वाल्मीकि

शिक्षा में भी भयावह भ्रष्टाचार

प्रधानमंत्री ने अपने स्वतंत्रता दिवस 2022 के उद्बोधन में भ्रष्टाचार और परिवारवाद की आलोचना की है। यह सही भी है कि ये दोनों बुराइयाँ इस देश को दीमक की तरह चाट कर खोखला कर रही हैं। प्रत्येक भारतीय इसका शिकार है। जहाँ तक परिवारवाद का प्रश्न है वह एकतंत्र, राजशाही और तानाशाही से कम नहीं है। रुका हुआ पानी सड़ने लगता है। परिवारवाद में भी जब एकाधिकार हो जाता है तो विकृतियाँ आना स्वाभाविक है। आख़िर क्यों पीढ़ी दर पीढ़ी हम शासन को अपनी बपौती मानने लगते हैं। क्या कोई स्थायी पट्टा उनके नाम का ईश्वर ने भेज दिया है? देश के कई प्रांतों में परिवारवाद की झलक मिल जायेगी, या तो वह है या उसका सदैव प्रयास रहता है। कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र, बिहार, उत्तरप्रदेश, ओडिसा, पश्चिम बंगाल, आदि में कुछ ने पूर्व में परिवारवाद भोगा है और कुछ में यह बुराई लाने का प्रयास चलता रहता है। इससे ही जुड़ा एक मुद्दा और है कि मुख्यमंत्री जो भी एक बार बन जाता है वह जीवनपर्यंत मुख्यमंत्री रहना चाहता है भले ही उसे अनुचित काम ही क्यों न करना पड़े। राजस्थान और बिहार इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। राजस्थान में वर्तमान मुख्यमंत्री येन केन प्रकारेण सदैव मुख्यमंत्री रहना चाहते हैं तो बिहार में मुख्यमंत्री ने गठबंधन बदल-बदल कर अनेक बार मुख्यमंत्री की शपथ ली है। यह घोर अनैतिकता है। नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ा कर ये राज्य व देश की जनता के सामने घोर चारित्रिक पतन और सत्ता लिप्सा का उदाहरण रखते हैं।

इस प्रकार के भ्रष्ट आचरण से जीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्ट आचरण को बढ़ावा मिलता है। राजनीतिक गठबंधन के साथ कइ नीतिगत समझौते करने पड़ते हैं। स्वार्थ पूर्ति करनी पड़ती है और अनुचित कार्य भी करने पड़ते हैं। बिहार के मुख्यमंत्री की छवि कुछ अच्छी थी, परंतु उनके लिये अब तो 'पलटूराम' शब्द प्रचलित हो गया है। ऐसे भ्रष्ट आचरण की जहाँ कहीं भी वह हो भर्त्सना करनी चाहिये।

राजनीतिक भ्रष्टाचार का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ता ही है और बिहार, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में फ़र्ज़ी डिग्री, फ़र्ज़ी विश्वविद्यालय व नकल के सबसे अधिक प्रकरण सामने आते रहते हैं।

शिक्षा में भ्रष्टाचार उसके अंकुरण से ही प्रारंभ हो जाता है। छात्र हैं तो स्कूल नहीं और स्कूल है तो छात्र नहीं। कहीं भवन नहीं तो कहीं शिक्षक नहीं। शिक्षक हैं तो अधिकांश अयोग्य और अकर्मण्य। उनकी शिक्षा भी तो ऐसी हुई कि पढ़ना चाहा नहीं, या तो सभी उत्तीर्ण कर दिये गये या नकल करके पास हो गये। हाँ अपवाद तो होते ही हैं पर ये नगण्य हैं। शिक्षकों को न विषय का ज्ञान है और न ही हिंदी अथवा अंग्रेज़ी में सही अभिव्यक्ति का। शिक्षण ही नहीं प्रशिक्षण भी बिना उपस्थिति के पूरा हो जाता है। अब बारी आती है शिक्षक भरती की तो कहीं परिवीक्षक नकल कराते हैं तो कहीं छात्र व शिक्षक सभी स्तरों पर नकल के नये-नये तरीके अपनाते हैं। इलेक्ट्रोनिक माध्यमों से भी यह नकल का धंधा खूब चलता है।

शिक्षक पात्रता परीक्षा में राजस्थान व बिहार व पश्चिम बंगाल में अनुचित साधनों की खूब चर्चा होती है। पश्चिमी बंगाल ने तो भ्रष्टाचार में कीर्तिमान स्थापित किये हैं। मेरिट लिस्ट ही बदल गई। भर्ती के नाम पर लाखों रुपये लिये गये और करोड़ों के ढेर स्नान घर में लगाये गये। एक मंत्री हटाये गये और वे हिरासत में हैं।

यही हाल विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों का है। अधिकांश शिक्षक स्वयं विषय निष्णात नहीं हैं। सिफारिशों से अधिकांश भरती होती है या फिर रिश्वत दी जाती है। कई कुलपति भरती घोटालों में लिप्त रहे हैं और उन्हें हटाया भी गया है। राजस्थान में उदयपुर, जोधपुर, अजमेर, बीकानेर आदि सभी प्रमुख विश्वविद्यालय के कुलपति भ्रष्टाचार में लिप्त पाये गये हैं। कुलपतियों ने विश्वविद्यालय होने, उसका भवन तैयार होने का प्रमाण पत्र दिया जबकि वहाँ कुछ नहीं था।

हाँ, एक अत्यावश्यक कदम और उठाना होगा राजकीय शिक्षकों की प्राइवेट ट्यूशन और राजकीय चिकित्सकों की प्राइवेट प्रेक्टिस पर पूर्ण प्रतिबंध हो, राजकीय कर्मचारियों/अधिकारियों व पदासीन राजनेताओं की शिक्षा व चिकित्सा राजकीय विद्यालयों व चिकित्सालयों में हो। कोचिंग सेन्टर बंद किये जायें।

एक विश्वविद्यालय ने फ़र्ज़ी मार्क शीट और वह भी उसका शुल्क हड़प कर भ्रष्टाचार हुआ। कहीं 120 सीट के स्थान पर 180 सीट कर दी गईं। ये सब भ्रष्टाचार के नमूने हैं। विश्वविद्यालय में नौकरी चलती रहती है, पदोन्नति होती रहती है और शिक्षक राजनीति में पूर्णकालिक सेवा देते रहते हैं। लेक्चरर हेतु पीएचडी को निरंतर मान्यता देकर फ़र्ज़ी व निम्नस्तरीय डिग्री को बढ़ावा मिला है।

शिक्षा व चिकित्सा में नैतिकता किसी भी राष्ट्र के नैतिक स्तर के मानदंड हैं, पर हमारे देश में इन दोनों ही क्षेत्रों में घोर भ्रष्टाचार पनप रहा है। चिकित्सा हेतु करोड़ों की राशि वसूल की जाती है और साधनों के पूर्ण अथवा आंशिक अभाव में प्रशिक्षण होता है। शिक्षा व चिकित्सा दोनों में रिज़र्वेशन (आरक्षण) ने कोढ़ में खाज का काम किया है। अयोग्य शिक्षक व चिकित्सक ही नहीं, भ्रष्ट आचरण वाले शिक्षकों व चिकित्सों को इससे बढ़ावा मिला है।

प्रधानमंत्री के उद्बोधन में भ्रष्टाचार का उल्लेख है, पर उसका उन्मूलन अपने आठ वर्ष के शासन में तो नहीं कर पाये हैं। शायद यह कहना ठीक होगा कि भ्रष्टाचार बेशर्मी व बेझिझक से खुलेआम शिष्टाचार की तरह हो गया है।

केन्द्र व राज्य सरकार का कोई भी विभाग भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है। मंत्रियों की नाक के नीचे अधिकारी व कर्मचारी भ्रष्टाचार करते हैं। केन्द्र व राज्य सरकारों ने कभी भी भ्रष्टाचार मिटाना ही नहीं चाहा, क्योंकि प्रत्येक राजनेता व अधिकारी को पैसा चाहिये। प्रति वर्ष जो गोपनीय प्रतिवेदन भरे जाते हैं उनमें सभी राजनेताओं से अपने व परिवार की सम्पत्ति का ब्यौरा देना होता है, क्या उसकी कभी कोई जाँच होती है? वह प्रारंभ करें। राजनेता शिक्षा से प्रत्येक स्तर पर दूर रहें, दखल न दें। प्रत्येक स्तर पर चयन में पारदर्शिता लायें।

चुनाव हेतु भ्रष्ट तरीकों से पैसा वसूल न करें। बेईमान कर्मचारियों व अधिकारियों को बर्खास्त कर नई भरती करें। भ्रष्टाचार तभी मिटेगा।

हाँ, एक अत्यावश्यक कदम और उठाना होगा राजकीय शिक्षकों की प्राइवेट ट्यूशन और राजकीय चिकित्सकों की प्राइवेट प्रेक्टिस पर पूर्ण प्रतिबंध हो, राजकीय कर्मचारियों/अधिकारियों व पदासीन राजनेताओं की शिक्षा व चिकित्सा राजकीय विद्यालयों व चिकित्सालयों में हो। कोचिंग सेन्टर बंद किये जायें। राजकीय शिक्षा व चिकित्सा संस्थानों में शिक्षण अथवा उपचार की व्यवस्था न होने पर ही अन्यत्र शिक्षा व चिकित्सा संस्थानों में भेजा जाय। विदेशों में सरकारी व्यय पर शिक्षा व चिकित्सा स्वदेश में उपलब्ध नहीं हो तो ही भेजा जाय। डिजिटिलाइजेशन में भी वरिष्ठ नागरिकों की सुविधा का ध्यान रखा जाय, क्योंकि कई के लिये उसे सीखना अब संभव नहीं है। जनता भी निश्चय ही भ्रष्टाचार में सहभागी है। वह भी अपने उचित-अनुचित सभी कार्यों हेतु भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है, उसे भी भ्रष्ट कर्मचारियों/अधिकारियों व राजनेताओं के आचरण की जानकारी उच्च अधिकारियों, मंत्रियों को बताना चाहिये और उसके आधार पर पदोन्नति व चुनाव लड़ाने पर रोक हो।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

राशिफल शनिवार 20 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, रोहिणी नक्षत्र रात्रि 4:40 तक, व्याघात योग रात्रि 9:41 तक, तैतिल करण दिन 12:04 तक, चन्द्रमा वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 4:40 तक रहेगा। ज्वालामुखी योग रात्रि 1:09 तक है। आज बुध कन्या राशि में रात्रि 2:06 तक है। आज गोगा नवमी, नन्द महोत्सव, रोहिणी व्रत, अश्वत्थ मारूती पूजन है। आज राजीव गांधी जयन्ती और सद्भावना दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:41 से 9:17 तक, चर 12:30 से 2:07 तक, लाभ-अमृत 2:07 से 5:20 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:04, सूर्यास्त 6:56

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा सफल रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

धनु

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कुंभ

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। धन प्राप्त होगा।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। भाई-बंधुओं-मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

उदयपुर संभाग में गवरी लोकानुष्ठान की धूम

पन्नालाल मेघवाल

उदयपुर संभाग में भील समुदाय का धार्मिक लोक नाट्य अनुष्ठान गवरी का पावन पर्व रक्षाबंधन के दूसरे दिन (ठंडी राखी) भादो महीने की एकम से प्रारंभ हो गया है। मेवाड़ क्षेत्र में यह गवरी लोक नाट्य अश्विन माह की नवमी तक पूरी आस्था, भक्ति भाव, उत्साह एवं धूमधाम से मंचित किया जा रहा है। मेवाड़ अंचल में भील समुदाय के लोगों ने गौरजा देवी के देवरों में जाकर परंपरा अनुसार पाती लेकर गवरी लोक नाट्य का मंचन प्रारंभ कर दिया है। चालीस दिन तक चलने वाले इस पर्व में भील समुदाय देवी पार्वती की प्रतीक गौरजा देवी की आराधना में तल्लीनता के साथ जुट गए हैं।

राजस्थान की समृद्ध लोक परंपराओं में यह नृत्य नाटिका सबसे अनूठी है। यह भील जनजाति का लोक नाट्य नृत्यानुष्ठान है, जो सैकड़ों वर्षों से प्रतिवर्ष नियमित रूप से मनाया जाता है। भील समाज की मान्यता है कि भगवान शिव उनके दामाद है और गौरजा अर्थात् पार्वती बहन-बेटी है। ठंडी राखी के दिन कैलाश पर्वत से गौरजा अपने पीहर मृत्यु लोक में सभी से मिलने आती है। गवरी खेलने के बहाने सवा माह तक अलग-अलग गांव में यह सबसे मिलती है। जनजाति के लोग गौरजा देवी को सर्व कल्याण तथा मंगल की प्रदात्री मानते हैं।

गवरी लोक नृत्य नाटिका खेलने वालों को खेल्ये कहा जाता है। गवरी लोक नाट्य मंचन के दौरान पूरे सवा महीने तक यह खेल्ये मात्र एक समय भोजन करते हैं। वह नहाते नहीं है तथा हरी सब्जी, मांस-मदिरा, स्त्री गमन का त्याग करते हैं। पांव में जूते नहीं पहनते हैं। एक बार घर से बाहर निकलने के बाद सवा माह तक अपने घर भी नहीं जाते हैं।

एक गांव का गवरी दल केवल अपने गांव में ही नहीं नाचता है, अपितु हर दिन उस अन्य गांव में जाता है, जहां उनके गांव की बहन-बेटी ब्याही गई है। नृत्य के अंत में गवरी को न्यौतने वाली बहन-बेटी उन्हें भोजन कराती है और कपड़े भेंट करती है, जिसे पहरावणी कहते हैं। कई बार जिस बहन-बेटी के गांव में गवरी खेली जाती है उस गांव में सभी मिलकर भोजन एवं पहरावणी का बंदोबस्त करते हैं।

गवरी नृत्य के लिए दल का गठन करते समय कलाकारों के लिए कपड़ों, गहनों और साज सज्जा आदि पर आने वाले खर्च को पूरे गांव के सभी जातियों के लोग मिल-जुल कर वहन करते हैं। जो कलाकार गवरी में जिस पात्र का अभिनय करता है, अक्सर वह हर समय उसी की वेशभूषा पहने रहता है। गवरी का आयोजन शहर एवं गांव के अलग-अलग स्थानों पर प्रात: 9 बजे से सांय 6 बजे तक चलता है। इसमें 15-16 वर्ष के युवकों से लेकर 50-60 वर्ष तक के पुरुष भाग लेते हैं। नृत्य नाटिका में 50-60 लोग पूर्ण हर्षोल्लास के साथ भाग लेते हैं। गांव में हर तीसरे वर्ष गवरी ली जाती है।

गवरी खेल में दो मुख्य पात्र राईबुड़िया और राईमाता सबसे अहम होते हैं। राईबुड़िया को शिव तथा राईमाता को पार्वती माना जाता है। इसलिए दर्शक इन पात्रों की पूजा भी करते हैं। गवरी का मूल कथानक शिव और भास्मासुर से संबंधित है। इसका नायक राईबुड़िया होता है, जो शिव तथा भस्मासुर का प्रतीक है। राईबुड़िया की वेशभूषा विशिष्ट होती है। गवरी के मुख्य खेलों में कान्ह-गुजरी, कालू कीर, बणजारा, मीणा, नाहर-सिंही, नाहर, कालका देवी, कालबेलिया, रोई-माछला, सूर-सूरडी, भंवरा-दानव, बडल्या-हिंदवा, कंजर-कंजरी, नौरतां, हरिया-अंबाव, खेतूड़ी एवं बादशाह की सवारी जैसे कई खेल आकर्षण का केंद्र होते हैं।

रक्षाबंधन के दूसरे दिन से ठीक चालीसवे दिन गडावण- वलावण पर्व के साथ गवरी का समापन किया जाता है। इस दिन गौरजा देवी की गजारूढ प्रतिमा को जल में विसर्जित किया जाता है। खेल्ये मिट्टी से गौरजा देवी की हाथी पर आरुढ प्रतिमा बनाते हैं। जिस दिन गौरजा देवी की प्रतिमा बनाई जाती है, उसी दिन गडावण पर्व मनाया जाता है। जिस दिन इसे विसर्जित किया जाता है उस दिन को वलावण पर्व कहा जाता है।

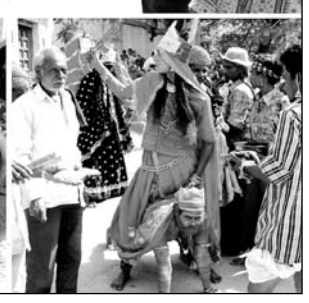

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक
एवं स्वतंत्र पत्रकार।

आई सी यू मत भेजजे

ठाकुर जी की पूजा के सामने बैठी माँ, माला के मणिये घुमा रही थी। प्रणाम करने आया तो इशारे से बैठने को कहा। माला का फेरा पूरा होने पर दोनों आखों से लगा, माला को रखा। बोली, 'म्हारा माथा पर हाथ रख'र कह कै मैं कहूं बो करैगो।' कहने लगी, 'मनै आखरी 'टेम' अस्पताल मत लेज्याजे। :दुरगत' 'म'तां कराजे।' दुर्गति (इनडिग्निटी) की उनकी अपनी सोच अपनी अवधारणा थी। माँ की इच्छा :-

म्हारी खुली हथेलियां, रखजे थारा हाथ।।
चेत नहीं, चित सै घणीं, ल्यूँगी मैं पहचाँण।
साँ का सुर, साँ की छुअन, रोम रोम की बाण।।
दुर्गत मता करायजे, सघन इकाई ेज।
नळी, षेगळया जकड़ कर, मोत जोहती सेज।।
अपणो जीवण जी चुकी, थाँ मैं जीउँ चाह।
मौत टळै दुर्गत हु'अै, आ म्हारी नी चाह।।
दुर्गत मता करायजे, नळयाँ, षेगळयाँ डाळ।
कंठा अटकै जीव ओ, टक-टक जोऊँ काळ।।
थाँ खातिर ही मैं जिई, ओ ही म्हारो नेम।
आई. स्यू. मत ेजजे, मनै आखरी टेम।।

मैंने अपने सहयोगी को माँ की इच्छा के बारे में बताया। छूटते ही बोले-'यह तो आत्म हत्या है।' मैंने उन्हें समझाया कि किसी भी व्ययस्क सक्षम व्यक्ति के होशो हवाश में लिए गए निर्णय के खिलाफ आप उसके शरीर पर कुछ नहीं कर सकते। उसकी स्वीकृति (कसेन्ट) आवश्यक है। नकारात्मक निर्णय (डिनायल आफ कसेन्ट) भी बाध्यकारी होता है। यह व्यक्ति की स्वायत्तता (ऑटोनोमी) के अधिकार में आता है। भविष्य के लिए लिए गए ऐसे निर्णय को एडवांस डायरेक्टिव अथवा लिविंग विल (वसीयत) कहते हैं। 'मुझे वेन्टीलेटर न लगाया जाए', 'जब मेरे दिल की धड़कन बंद हो जाय तब सी पी आर कर मुझे वापस जिलाने की चेष्टा न की जाए', 'डू नॉट रिसेसिटेट' ऐसे एडवांस डायरेक्टिव देने का अधिकार सक्षम व्यक्ति का है। इसे चिकित्सकीय भाषा में 'डी एन आर' कहा जाता है। हर व्यक्ति को डिग्निफाईड डेथ - मर्यादित मृत्यु का अधिकार है। क्या मर्यादित है, दुर्गति क्या है, यह हर व्यक्ति की व्यक्तिगत अवधारणा होती है। देह का मोह त्याग, मृत्यु को सहज स्वीकारना सरल नहीं होता। पीड़ा रहित सहज स्वाभाविक मृत्यु की अपेक्षा और आकांक्षा हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति की अपनी अपनी अवधारणा होती है।

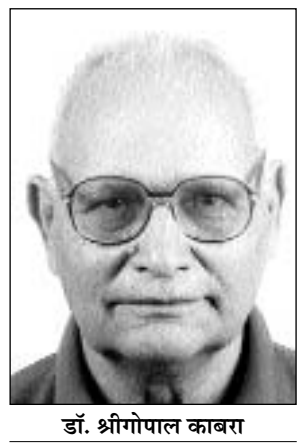

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

किरवाड़ा निवासी राजेश वर्मा राष्ट्रपति के सचिव बने

श्रीमहावीरजी, (निसं)। भारत सरकार ने उड़ीसा केडर से 1987 में आईएएस बने राजेश वर्मा को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू का सचिव नियुक्त किया है। इससे पहले राजेश वर्मा उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के सचिव व वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन के विभाग में सचिव पद पर कार्यरत रहे।

राजेश वर्मा के पिता श्रीराम वर्मा चीफ जनरल मैनेजर (आई ई एस) से 2003 में सेवानिवृत्त हुए। राजेश वर्मा के छोटे भाई राकेश वर्मा डिप्टी जनरल मैनेजर के पद पर कार्यरत है। बहन डॉ. आशा वर्मा जनाना हॉस्पिटल एसएमएस जयपुर की अधीक्षक है। गांव किरवाडा में राजेश वर्मा के राष्ट्रपति के सचिव बनने पर खुशी की लहर दौड़ गई। ग्रामीणों ने एकत्रित होकर के आपस में मिठाई खिला कर प्रसन्नता जाहिर की।

भारत सरकार ने उड़ीसा केडर से 1987 में आईएएस बने राजेश वर्मा को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू का सचिव नियुक्त किया।

आपणी पाठशाला में पहुंचा जापान का प्रतिनिधि मंडल

- **प्रतिनिधि मंडल ने सांसद राहुल कस्वां के साथ किया निरीक्षण**
- **जापानी प्रतिनिधि मंडल ने अनूठी पहल की प्रशंसा की**

चूरू, (कासं)। बच्चों से रूबरू होने के लिए जापान के प्रतिनिधि मंडल के साथ सांसद राहुल कस्वां चूरू ज़िला मुख्यालय पर चल रही आपणी पाठशाला में पहुंचे। उन्होंने यहां धर्मवीर जाखड़ द्वारा संचालित आपणी पाठशाला का निरीक्षण किया। संस्था संरक्षक प्रो एच आर इसरान ने बताया कि गरीब व वंचित बच्चों के हितार्थ धर्मवीर जाखड़ द्वारा चलाई जा रही आपणी पाठशाला समाज सेवा का अद्वितीय उदाहरण है। गरीब बच्चों के भविष्य को सुधारने का अनुकरणीय प्रयास आपणी पाठशाला चूरू द्वारा किया जा रहा है। जापानी प्रतिनिधि मंडल ने इस अनूठी पहल की प्रशंसा की। जापानी दूतावास के राजनीतिक सलाहकार केनतारो ओरिता ने कहा कि आपणी पाठशाला की गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट बनाकर जापान सरकार को भेजेंगे।

केनतारो ने इस पूरे कार्य में शिक्षक की भूमिका निभा रहे शिक्षक टीम की सरहाना की। इस पर धर्मवीर जाखड़ ने उपस्थित शिक्षक टीम से परिचय करवाया। मौके पर मौजूद सभी शिक्षकों ने अतिथियों का माला पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान जापान दूतावास के वरिष्ठ अधिकारी सिद्धार्थ कुमार, भाजपा प्रदेश कोषाध्यक्ष पंकज गुप्ता, जिला प्रमुख वंदना आर्य सहित प्रशासनिक अधिकारी, संस्था सदस्य धर्मवीर जाखड़, मुकेश देवी, दिलीप सरावग, राजेन्द्र सुंडा, दीपचंद सहारण आदि उपस्थित रहे।

किंजर धाम मेले में रहा कुश्तियों का रोमांच

हिण्डौन/ टोडाभीम, (निस)। समीपवर्ती आस्थाधाम किंजर धाम में शुक्रवार को आयोजित वार्षिक मेले में हजारों भक्तों ने दर्शन कर मन्नतें मांगी।इस अवसर पर कुश्तियों का रोमांच रहा, जिसमें मुख्य अतिथि पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना किसान संघर्ष समिति के प्रदेशाध्यक्ष भामाशाह रामनिवास मीना ने विजेता पहलवानों को पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया। इस दौरान आस्थाधाम स्थित पवित्र गुफा के दर्शन कर भक्तों ने चरणामृत लिया।

गांव भंडारी की पहाड़ी की तलहटी

- **किसान नेता रामनिवास ने पहलवानों को किया पुरस्कृत**

स्थित प्राचीन तपोभूमि किंजर बैकुंठ धाम पर हर वर्ष की भांति शुक्रवार को जन्माष्टमी के अवसर पर वार्षिक मेले का आयोजन हुआ। मेले में सुबह से ही धर्मप्रेमियों का आना शुरू हो गया। दोपहर तक उपखंड सहित प्रदेश के विभिन्न अंचलों से आए हजारों भक्तों ने ठाकुरजी महाराज तथा पवित्र गुफा के दर्शन कर मन्नतें मांगी। इस अवसर कुश्ती एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसमें सैकड़ों प्रतियोगियों ने भाग लिया। मेला स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था के तहत पुलिस की माकूल व्यवस्था रही। मेला आयोजन से जुड़े राजेन्द्र सिंह चौहान, नरेंद्र सिंह चौहान, बिशन सिंह चौहान, भवानी सिंह चौहान आदि ने बताया कि मेले में श्रद्धालुओं के आवागमन व्यवस्था में पुलिस के साथ कार्यकर्ताओं ने भी सहयोग किया। मेले में मुख्य आकर्षण कुश्तियों का रोमांच रहा। कुश्ती दंगल में आसपास सहित दूरदराज से आए पहलवानों ने दांवपेंच दिखाए। आखिरी 31 हजार की इनामी कुश्ती बयाना के पहलवान लाखन और अलवर के पहलवान तौफीक के बीच हुई, जो बराबर में छूटी।

आस्थाधाम किंजर धाम में आयोजित वार्षिक मेले में कुश्तियों का रोमांच रहा, जिसमें विजेता पहलवानों को पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया।

पगड़ियां बांधकर बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

बीकानेर, (कासं)। सुजानदेसर, बीकानेर के कमल भाटी ने एक बार फिर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने 15 अगस्त के दिन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुजानदेसर में बच्चों के सिर पर मात्र 57 मिनट में 215 साफा बाँधकर एक नया वर्ल्ड रिकॉर्ड

- **कमल भाटी ने 57 मिनट में 215 साफे बांधे**

बना लिया है। उन्होंने पहले भी दो वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए हुए हैं। ये लगभग 150 से ज्यादा तरह के साफा बाँध सकते हैं। इन्होंने 675 मीटर लम्बी पगड़ी बांधकर भी वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है और साथ ही माचिस की तीली पर भी पगड़ी बाँधकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया है। आंखों पर पट्टी बाँधकर कर भी ये साफा बांधने में माहिर हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि कमल ने भगवान लड्डू गोपाल के लिए साफा फ्री सेवा कर रखी है।